SNBP International & Senior Secondary School, Chikhali, Pune.
Affiliation No. 1130703
Academic session 2024-25
Term 1 Cass-notes
Subject: HINDI

CLASS: 6 L.No. 8 समास (व्याकरण)
Prepared by:DEEPIKA MEHRA DATE-
Prepared Date : Given Date :

समास

परिभाषा – दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने सार्थक और संक्षिप्त शब्द के बनने की विधि को समास कहते हैं |

जैसे – रसोईघर – रसोई के लिए घर , धूप – दीप – धूप और दीप

समस्त पद – समास के नियमों से बना शब्द समस्त पद होता है | इसे समासिक पद भी कहते हैं |
इसमें दो पद होते हैं – पहले पद को पूर्वपद और दूसरे शब्द को उत्तरपद कहते हैं |जैसे –चंद्रमुख में चंद्रमा पूर्वपद और मुख उत्तरपद होता हैं |

समास विग्रह – समस्त पदों को तोड़ने अर्थात अलग –अलग करने की विधि को समास विग्रह कहते हैं |

जैसे –चंद्रमुख का विग्रह हुआ – चंद्रमा के समान मुख

समास के भेद – समास के छह भेद होते हैं :

१) तत्पुरुष समास – जिस समस्त पद में पूर्व पद संज्ञा या विशेषण तथा उत्तर पद संज्ञा तथा प्रधान होता हैं ,उसे तत्पुरुष समास कहते हैं |

जैसे – स्वर्गप्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त , परलोकगमन – परलोक को गमन

२) द्विगु समास – जिस समास में पूर्व पद संख्यावाची विशेषण हो और जिसके समस्त पद में समूह का बोध हो ,उसे द्विगु समास कहते हैं |

जैसे – त्रिलोक – तीनों लोकों का समूह चौमासा – चार मासों का समूह

३) द्वंद्व समास – जिस समास में दोनों पद (पूर्व पद तथा उत्तर पद) समान तथा प्रधान हो और समास विग्रह करने पर दोनों के बीच और , या ,अथवा का प्रयोग हो तो उसे द्वंद्व समास कहते हैं |

जैसे –पाप – पुण्य - पाप और पुण्य , माता –पिता - माता या पिता

४) कर्मधारय समास – जिस समास में दोनों पदों के बीच विशेषण – विशेष्य अथवा उपमेय –उपमान का संबंध रहता है वहाँ कर्मधारय समास होता है |

जैसे – महात्मा - महान है जो आत्मा , घनश्याम - घन के समान श्याम

५) अव्ययीभाव समास - जिस समास का पूर्व पद अव्यय प्रधान हो और उत्तर पद संज्ञा या विशेषण हो तथा समस्त पद अव्यय का ही काम करे ,उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं |

जैसे – यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार , आजन्म - जीवनभर

६) बहुव्रीहि समास - जिस समास में पूर्व पद तथा उत्तर पद में से कोई भी प्रधान न हो और समस्त पद किसी अन्य का पर्याय बन जाए ,उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं |

जैसे – दशानन - दस हैं आनन जिसके अर्थात रावण